सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजयख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, मार्च-अप्रैल, 2017

देखो, सब कुछ नया है

मन फिराना क्या होता है? उसे 'नया जन्म' कहा गया है। वह परमेश्वर के पुत्र के राज्य में जन्म लेना है। वह एक आध्यात्मिक साम्राज्य है। यानी कि पवित्र आत्मा द्वारा जन्में आदमी इस राज्य के हैं। इस राज्य में सब कुछ परमेश्वर के आत्मा के द्वारा चलाया जाता है। यह एक नया राज्य है और यहाँ सब नियम नये हैं। इस राज्य में, परमेश्वर आपके पिता बन जाते हैं। जब आप 'पिता' कहते हो, आप सचमुच महसूस करते हो कि वह आपके पिता हैं। आपकी आत्मा में पुत्रत्व का एहसास बढ़ता जा रहा है। 'इसलिए कि तुम पुत्र हो, परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा! हे पिता!' कह कर पुकारता है, हमारे हृदयों में भेजा है।' (गलातियों 4:6) जब हम प्रभु की सिखाई प्रार्थना करते हैं, हम कहते हैं, 'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है।' जब हमारे पाप धुल जाते हैं तब, परमेश्वर हमारा पिता है, इसका एहसास

देखो- सबकुछ नया... पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

*हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे*

यीशु मसीह, दुबारा जी उठा - उद्धारकर्ता

'और देखो, एक बहुत बड़ा भूकम्प हुआ, क्योंकि परमेश्वर का एक दूत स्वर्ग से उतर कर आया और पत्थर को अलग लुढ़का कर उस पर बैठा।' (मत्ती 28:2)

जब यीशु मृतकों में से जी उठे, तब मानवता पर क्या ही महिमामय सवेरा उदय हुआ! यीशु मसीह की कब्र को पिलातुस ने, जो उस समय का रोमी राज्यपाल था, मुहर लगा कर बन्द किया था। उस ने आदेश दिया था कि रोमी सैनिकों की एक टुकड़ी कब्र पर पहरा दे और देखें कि कब्र के साथ कोई कुछ छेड़छाड़ न करे। परन्तु प्रभु का स्वर्गदूत आया और कब्र के मुंह पर रखे पत्थर को लुढ़का दिया। प्रभु यीशु कब्र से जीवित निकल आये।

पूरे इतिहास में केवल एक ही कब्र खाली हुई। आप केवल इस विषय में आश्चर्य कीजीए। लोग नबियों और दूसरों की कब्र की पूजा करते हैं। मुझे नहीं मालूम कि उन्हें इन कब्रों की पूजा करने से क्या अच्छाई मिलती है। परंतु हमारे पास कोई कब्र नहीं जिसकी हम पूजा करें और न हीं कोई मृतक शरीर है कि जिस की हम पूजा करें। हमारे पास जीवित ख्रीष्ट यीशु है – जी उठा हुआ उद्धारकर्ता! वही पुनरुत्थान और जीवन है। कोई भी पुनरुत्थान नहीं चाहता था। ओह, यीशु उनके लिए खतरा बन गया था। उन्होंने सोचा कि उनका धर्म लुप्त हो जाएगा। उन्होंने कहा, "यहां वह है जो पवित्रता का निर्देश देता है। हम उनकी तरह नहीं है। हमें यह नहीं चाहिए। हमें उसे मार डालना चाहिए। हमें उन्हें गाड़ देना चाहिए।" उन्होंने पिलातुस की मुहर लगा दी और सोचा कि अब यीशु का अंत हो जाएगा। उनकी मुहर व्यर्थ ठहरी और उनका पहरा देना भी बेकार रहा। यीशु फिर से जी उठा। उनके जी उठने के बाद वे अपने चेलों को दिखाई दिये।

संत पौलूस इस चमत्कार को इफीसियों (2 : 5,6) में इस प्रकार वर्णन करते हैं, 'जब की हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया - अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है - और मसीह में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में बैठाया।' ख्रीष्ट यीशु का पुनरुत्थान हमारे लिए क्या मतलब रखता है? जब मैंने मसीह यीशु पर भरोसा रखा, जब मैंने दूसरी मूर्तियों से अपना मुंह मोड़ लिया तब एक नया चमत्कार मेरे जीवन हुआ और एक नया जीवन मेरे अंदर आया और मेरे जीवन में मसीह यीशु प्रगट हुए। जब मैं यीशु मसीह की ओर मुड़ा, मैं उस समय एक विद्यार्थी था। उस समय मेरा अपना एक युद्ध था। मुझे एक उध्दारकर्ता की जरूरत थी जो वास्तविक हो। यहां बाइबल बताती है कि मसीह यीशु में उसने हमें जिलाया। हम पुनरुत्थान में उसके

सहभागी बन जाते हैं।

बहुत लोग नहीं जानते हैं की बपतिस्मा का क्या मतलब है। वे सोचते है की यह तो एक धार्मिक नियम पालन करना या धार्मिक उत्सव है। नहीं, यह आंतरिक अनुभव है और एक बाह्य गवाही है, जिसका मतलब है, मेरा पुराना जीवन ख्रीष्ट के साथ मारा गया, उनके साथ गाड़ा गया। जब एक व्यक्ति बपतिस्मा के समय पानी के अंदर जाता है उसका पुराना जीवन ख्रीष्ट के साथ गाड़ा जाता है। जब वह पानी से ऊपर आता है, इसका मतलब वह ख्रीष्ट के साथ दुबारा जी उठा है। यही वह चित्र और आकार है। यह आपके जीवन में प्रगट होना चाहिए। नहीं तो यह केवल एक नाममात्र का विषय बनकर रह जाएगा।

संत पैलुस कहते है कि यीशु ये "पवित्रता के आत्मा के अनुसार मृतकों में से जी उठने के द्वारा, सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र घोषित हुआ, अर्थात् यीशु मसीह हमारा प्रभु।" (रोमियो 1:4) यह एक सुस्पष्ट और अकाट्य चिन्ह है जो मनुष्य का नहीं है - पवित्रता के आत्मा का है। यीशु मसीह पापरहित उध्दारकर्ता है। आप कहीं भी इस तरह के व्यक्ति को पा नहीं सकते हैं। कोई भी नबी इस योग्य नहीं है जो यीशु मसीह के जूते के बंधन को स्पर्श कर सके। भारत मंदिरों से भरा है भारतीय मूर्तिपूजा को पश्चिमी देशों और उत्तरी अमेरिका में ले गये। उन देशों में उन्होंने हिन्दु मंदिरों का निर्माण किया और वहां सभी हिन्दु त्योहारों को मानते हैं। क्या खो गया है? पवित्रता खो गई है। इन उत्सवों के समय वे शराब पीते हैं और कुछ मूर्तियों के सामने नाचते कूदते हैं। पवित्रता का आत्मा वहां पर नहीं हैं। यीशु ख्रीष्ट मृतकों में से जी उठे हैं और अपने पुनरुत्थान के बाद, वे न केवल अपने चेलों के बीच घूमे, बल्कि उन्होंने उनसे कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" (मत्ती 28:18) हां, वे सभी शक्तियों और अनुग्रह के परमेश्वर हैं। वे हमारे पुनरुत्थित उध्दारकर्ता हैं जो आज भी जीवित हैं। वे हरेक को बचाना चाहते हैं जो उनके पास आता है। वे कहते हैं, "हे थके और बोझ से लदे हुए लोगों मेरे पास आओ मैं तुम्हे विश्राम दूंगा।" (मत्ती 11:28) आज इस अशान्त या बेचैन दुनियां में यीशु मसीह अपनी शान्ति उनको देते हैं जो उनकी ओर फिरता हैं, वे पुनरुत्थित उध्दारकर्ता हैं।

मैं निरन्तर अपने उध्दारकर्ता के पास जाता हूं। जब तक मुझमें सांस है, मैं उनकी सेवा करूंगा। क्या ही महान उध्दारकर्ता है। यदि आप कहते हैं कि आप मसीही हैं तब आपको अपने जीवन में मसीह को दिखाना होगा। मैं यीशु के समान बनना चाहता हूं। मैं उन अद्भुत विचारों को पाना चाहता हूं। मैं उनके अद्भुत स्पर्श को पाना चाहता हूं। वे पुनरुत्थित ख्रीष्ट हैं! वे आज, कल और युगानयुग एक समान हैं।

जब आप और मैं कहते हैं कि हम यीशु के चेले हैं, हमें दिखाना होगा कि हरेक की भांति यीशु नहीं मरे और न हीं उनका शरीर सड़ा, पर वे आज भी जीवित हैं। आप सक्षम होंगे कि लोगों को चुनौती देकर कह सकेंगे, "मेरे जीवन को देखो और आप देख सकेंगे कि यीशु आज भी जीवित हैं। मेरा उध्दारकर्ता मेरे हृदय में निवास करता है।" हमारे जीवन में हमें प्रभु यीशु मसीह के जी उठने की शक्ति को सिद्ध करना होगा। हमें जी उठनेवाले उध्दारकर्ता के करीब चलना होगा और हमें "पृथ्वी का नमक" और "जगत की ज्योति" बनना होगा। ऐसा बनने केलिये जी उठा उध्दारकर्ता हमारी मदद करे!

-जोशुआ दानिएल

देखो-सब कुछ नया.. पृष्ठ 1 से

शुरू होता है। इसका मतलब है कि हमने पश्चाताप किया है। जब हम पश्चाताप करते हैं एक टूटे और पिसे हुए हृदय को हम पाते हैं। तब परमेश्वर का आत्मा हमारे अन्तःकरण में कार्य कर पायेगा। अनुताप रहित लोगों के साथ परमेश्वर कुछ नहीं कर पायेंगे। अगर परमेश्वर कुछ कार्रवाई करें, तो उन पर वह एक भयानक सज़ा बन जायेगा।

हम लोगों ने एक नए राज्य में प्रवेश किया है। वह आपके लिए एक विदेशी भूमि की तरह होगी। यीशु जो आपके लिए मरकर पुनः जी उठा है, इस राज्य में प्रवेश पाने का आप को एक पासपोर्ट दिया है। आपने एक नई वाचा में प्रवेश किया है। 'तब मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा और तुम शुद्ध हो जाओगे; मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूर्तियों से शुद्ध करूंगा। और फिर मैं तुम्हें एक नया हृदय दूंगा और तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा उत्पन्न करूंगा और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम्हें मांस

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBSMarg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

का हृदय दूंगा। और मैं अपना आत्मा तुम में डालूंगा और तुम्हें अपनी विधियों पर चलाऊंगा और तुम मेरे नियमों का सावधानी से पालन करोगे।' (यहेजकेल 36:25-27) अब इस वाचा के द्वारा, आप एक नया हृदय पाये हो। परमेश्वर का आत्मा आप में वास करेगा इससे कि आप इस वाचा का पालन कर पाओ। और तब उनके नियमों का आप सावधानी से पालन करोगे। आपके मन में तब एक सहज आज्ञाकारिता उत्पन्न होगी। आपकी अभिरुचियाँ बदल जायेंगीं। आपके झुकाव और प्रवृत्ति पूरी तरफ से बदल कर नये किये जायेंगे। ना जानते हुए कि आप ऐसा क्यों कर रहे हो, आप भला करने लगोगे। विह्वल आप सिर्फ सच ही बोल पाओगे। पूरे समय आप में एक आध्यात्मिक सामंजस्य विकसित हो रहा है जिस से कि अतीत में उपस्थित तनाव अब घटते जाते हैं। एक समय पर, जब भलाई करना चाहते थे, तो आप में संघर्ष रहता था। एक तरह का बल, आपको बुरे कार्य करने और बुरे विचारों में आपको नीचे खींच लेता था। ऐसी शक्तियाँ अब कम हो जायेंगीं। आपके सुबह की प्रार्थना अब परस्पर मन की बातें करने का समय होगा, जब उस दिन के सारे कर्तव्यों और आनेवाले प्रलोभन का खुलासा होगा। परमेश्वर का वचन आपके लिए आध्यात्मिक पोषण बन जायेगा। और वह जीवन और प्राण बन जायेगा। और आपके आत्मा का जीवन संपन्न बन जायेगा। आपको अगुवाई करने वाले आत्मा अब तीव्र होगा। अगर आप सावधान रहे, तो आप के ध्यान में आयेगा कि आप अपने स्वामी जैसा बन रहे हो। बुरी संगत आप ना पसंद करोगे। बुरी इच्छायें आप को छोड़ देंगीं। आप के पुराने दोस्त आपकी संगति में बेचैन हो जायेंगे और परदाफाश वे आप को छोड़ जायेंगे। जब आपके अंदर जो आत्मा है उस से उनके आत्मा के ठोकर खाने के कारण वे बहुत दुखित हो जायेंगे। आपके रिश्तेदार भी आपका साथ छोड़ देंगे। पीठ पीछे तो निंदा करेंगे मगर आपके सामने चुप रहेगें। आपकी सलाह हमेशा एक बवंडर की तरह होगी जो उनके संतुलन मे कंपकपी पैदा कर देगी। इस दुनिया के लोगों के बीच आप एक साहचर्य प्राप्त नहीं कर पाओगे। पाप की इस दुनिया से आप अधिक और अधिक अलग होते जाओगे। मगर परमेश्वर के बच्चे चाहे जितने भी चुने-गिने हो, शिक्षित या अनपढ़ हो, अमीर हो या गरीब उनके बीच में आप नज़दीकी महसूस करोगे। आप उनके साथ मिलकर आराधना और प्रार्थना करना चाहोगे। और यह सब करने के लिए आपको कोई मजबूर न करना पड़ेगा।

मन फिराने से पहले आप स्वयं अपने स्वामी हो। मगर अब कहोगे, 'मैं स्वयं अपनी ओर से कुछ नहीं कर सकता। जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी नहीं, वरन अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ।' (यूहन्ना 5:30) 'तू सम्पूर्ण हृदय से यहोवा पर भरोसा रखना, और अपनी समझ का सहारा न लेना। उसीको स्मरण करके अपने सब कार्य करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।' (नीतिवचन 3:5-6) तब आप एक उच्च प्राधिकार को स्वीकार करोगे और एक श्रेष्ठतर मन, अचूक आपकी अगुवाई करेगा। मासूमियत से भरा मगर आपको समझदार करता एक पवित्र ज्ञान आपकी रेहनुमाई करता रहेगा। आप सर्प के समान चतुर और कबूतर के समान भोले बन जाओगे। फिर भी आप में जो वह पुराना मनुष्य है जब आप लापरवाह हो जाते हो, तो अपना सिर उठाते आप में सांसारिक इच्छाओं को पैदा करेगा। मगर क्रूस पर विश्वास अचानक आपको झटका देगा। और आपमें जो शरीर की अभिलाषा, आँखों की लालसा और जीवन का अहंकार है, पूर्ण रूप से बिखरा दिये जायेंगे। 'यह जानते हुए कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, कि हमारा पाप का शरीर निष्क्रिय हो जाए, कि हम आगे को पाप के दास न रहें; क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूट कर निर्दोष ठहरा। अब यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हम विश्वास करते हैं कि उसके साथ जीवित भी रहेंगे।' (रोमियों 6:6-8) बार-बार यह होता रहेगा और इस से आपकी व्यावहारिक सोच और जीवन की अभिलाषायें बदल जायेंगीं। दुःख तो रहेंगे मगर वे इस दुनिया के नहीं होंगे जो बीमारी और मौत लाते हैं। इस दुनिया का दुःख चाहे जितना भी न्यायोचित या मामूली क्यों न हो मगर वे इस शरीर का दुश्मन साबित होगा। और शरीर से महत्तम शक्ति को चूस लेंगे। मगर आत्मा में दुख यानी पाश्चाताप के द्वारा उत्पन्न दुख एक महान आशीष होगा। जब एक बुरा विचार आये तो आप की आत्मा रो पड़ेगी। आप में, यीशु का सुन्दर स्वारूप्य को क्षति पहुँचेगी। प्रभु का सौंदर्य नष्ट हो जायेगा। एक सुन्दर स्त्री के चहरे पर लगे घाव जो उसे बदसूरत करते, एक स्थायी निशान छोड़ जाये जिस से वह स्त्री बहुत उदास हो जाये, वह विचार उस घाव की तरह है।

आपका आइना, बाइबल और आंतरिक प्रभूत प्रकाश से रोशन होगा, और गहरा शोक आपके अन्दर उत्पन्न करेगा। कभी-कभी आप किसी दूसरे आदमी की सम्पन्नता देख कर खुश नहीं हो पाये, इस के कारण आप दुखी हो जाओगे। या फिर किसी की खुशी में आप हर्षित ना हो पाये, इस बात से आप दुख से भर जाओगे। कोई भी अपवित्र विचार आप को रोककर, बैठकर रोने पर मजबूर करेगा। आप अचानक जागरूक हो जाओगे। लम्बे समय से आप ऐसे विचारों से मुक्त थे। मगर किसी भी समय आप ने उस बुरे विचार पर मनन करके, शैतान को मौका दिया तो आप में जहर प्रवेश करेगा।

पवित्र आत्मा आपको सिखायेगा कि उस बुरे सोच का मंथन नहीं करना चाहिए। जब आपके पड़ोसी को पदोन्नति मिलती है जो आपको मिलनी चाहिए थी, आप तब भी खुश होने का प्रयास करोगे। यह एक बहुत बड़ी विजय होगी। वह सांसारिक सौभाग्य नहीं जो आपको खुश, तंदुरूस्त और उपयोगी रखेगा। मगर जब परमेश्वर आपको यूसुफ की तरह पदोन्नति दे, तो आप कई हजारों के लिए आशिष का कारण साबित हो जाओगे। और आप आध्यात्मिक रूप से आपने आपको हमेशा युतिसम्पन्न पाओगे। आपको तरक्की ना मिलने पर भी, आपको यकीन होगा कि वह आगे चलकर एक आशीष ही साबित होगा। आपका पड़ोसी जो कभी प्रार्थना नहीं करता है उसको वह तरक्की मिल जाती है। और उसी कारण उसे किसी और जगह भेजा जाता है जहाँ उसके चारों तरफ के लोग ईर्ष्या के कारण उसे हानि पहुँचाते है और आजीवन उसे नुकसान पहुँचाते है। तब आपको आभास हो जायेगा कि वह पदोन्नति से अंत में कोई आशीष नहीं है। आप अपने बैरियों की मदद करोगे, मित्र और रिश्तेदारों को क्षमा करते हुए उनके साथ पूरा प्रेम करोगे, परमेश्वर के दिए महान प्रेम को अचूक तरीके से दुनिया को दिखाओगे। जब आप दूसरों की मदद नहीं कर पाये तो आप बहुत दुखी महसूस करोगे। मगर आपको यह बात जाननी होगी कि पाप में जी रहे लोगों को आराम देने या मदद न कर पाओगे। पाप भरे हृदय को संतुष्ट करने योग्य आप में कुछ भी नहीं है। मगर आज उनके लिए प्रर्थना करोगे और उन्हें कुछ शब्द कहोगे, वो उन्हें तुरन्त समझ में नहीं आयेगा। मगर विश्वास के साथ की गई प्रार्थना से, आपके विचार, पाप से लिप्त उनके दिलों के आर-पार हो जाएंगे। एक दिन वे आपके विचारों को समझ पायेंगे।

यह एक नई दुनिया है। और परमेश्वर आप पर भरोसा कर आपको, चंगा करने या नबूवत करने का वरदान दे सकते हैं। वह आपको पैसा भी दे सकते हैं। जब पैसे आपके हाथ में आ जाएं, तो आप इस बात पर थरथराओगे कि कहीं आप उनका कहीं गलत इस्तेमाल ना कर दे। यह प्रभु की दी हुई जिम्मेवारी है। जितना पैसा पहले कभी नहीं देखा, उतना पैसा कुछ लोग पा सकते है, मगर वह एक पवित्र जिम्मेवारी होगी। यहाँ कई लोग चूक जाते है क्योंकि यह अभिमान और ध्यान आकर्षित करने का अवसर बन सकते है। प्रशंसा, कभी कभार हमारे अंदर जहर फैला सकता है। बहुत प्रार्थना करते आप को सावधान रहना होगा। और परमेश्वर के सेवकों के साथ आध्यात्मिक संगति आपको हमेशा बचाती रहेगी। आपका जीवन एक खुली किताब की तरह रहे। छिपकर बातें सुननेवालों से आप नहीं डरोगे। छिपकर आपकी चिट्ठियों को पढ़वालों से आप नहीं डरोगे। हाँ, ईर्ष्या से भरे लोग आप पर हमला करेंगे। मगर ऐसी बातों पर आप आसानी से जीत पाओगे।

- एन. दानिएल।

चंगाई

चीन की एक बाइबल पर चलने वाली स्त्री श्रीमती. ली का एक पोता था, जिसका दायाँ हाथ लकवे के कारण शक्तिहीन हो गया था। उसके पिताजी एक प्रशिक्षित डॉक्टर थे। उस बच्चे के लिए हर संभव प्रयास किया गया, मगर वह हाथ अपाहिज और बेकार ही रहा। हफ्ते भर की संजीवन सभाओं में भाग लेने, कुछ ईसाइयों के साथ श्रीमती. ली लिनछिंग चली गई। वह ऐसा समय था, जिसमें परमेश्वर अपने लोगों से मिलते।

एक दिन सुबह जब अद्भुत अध्यात्मिक संचलन जारी था, श्रीमती.ली ने अपने जीवन में कुछ विषयों के लिए प्रगाढ़ पश्चाताप महसूस किया। विनम्र और मौन ही उसने प्रभु के सामने सब कुछ कबूल किया। तब उसे अपने प्यारे पोते की स्थिति याद आई। उसने आग्रह पूर्वक प्रभु से विनती की कि वे उस बच्चे को चंगा करें।

कुछ दिनों बाद, सभाओं के पूरा होने पर श्रीमती. ली घर वापस लौट आई। अपने बच्चे को बाहों में लिये उनकी बहू ने उनका स्वागत किया, वो बच्चा अपने दोनों हाथों को आगे फैलाए था! चंगाई कब आई, उस ने पूछताछ की। श्रीमती. ली ने पाया कि, संजीवन सभाओं के दौरान था जब उसने प्रार्थना की थी, तभी ये चंगाई मिली थी। 'देख मैं सब प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूँ, क्या मेरे लिए कोई काम कठिन है?' (यिर्मयाह 32:27)

- रोजालिण्ड गोफोर्त का 'क्लैम्बिंगः मेमोरीस ऑफ ए मिशनरी वाइफ' पढ़ें!

सत्य की परख!

'यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ। इसकी सुनो!'

- (मत्ती 17:5)

कंपन – प्रार्थना की सामर्थ्य

एक जबरदस्त धमाका और कुछ ढह गया, धूल का बादल छटने पर बरबादी की एक तस्वीर नजर आयी। हमारे पुराने अरबी घर की गेलरी का आलंबिक स्तंभ टूटकर आंगन में बिखरा पड़ा था। नीले और सफेद टाइल्स लगी मेहराब और इमारत का कुछ भाग भी साथ साथ ढह गए थे, साथ में थी मानो ईटों की बौछार।

नीचे हमारे बगल में, कुछ छः या सात साल पहले एक देशी नानबाई (बेकर) आकर बस गया था। इसका मतलब था कि हर रात घंटों भर दो

आदमी, आटा गूंदने के लिए मानो ऐसे झूले का इस्तेमान करते जिसमे दोनो आमने सामने बठते। और वह मशीन ऊपर-नीचे झूलने की हर बार जमीन पर ठकरा कर झटका देती, उस झटके से हमारा घर कंपित होता। अब अखिरकार उसका नतीजा सामने आया। इस दुनिया के अंत तक टिकने जैसा दिखने वाला स्तंभ अब तबाह होकर बिखरा पड़ा है। शहर का वास्तुकार आया और जाँचकर निर्धारित किया कि इमारत गिरने का संभव कारण वहीं है। और उस बेकर से आग्रह किया कि वे अपना आटा गूंधने का कोई और तरीका निकाले।

मगर इस दौरान परमेश्वर ने सत्य के विषय में एक आखों देखा पाठ सिखाया जो कंपन की उस अजीब शक्ति के बारे में सोचते समय मन में कौंधा।

इस दुनिया की धूल और आत्मिक अंधकार के विरुद्ध एक कंपन शक्ति (प्रार्थना) काम कर रही है जो अदृश्य लोक की ऊपरी वायु-मंडल में अपना असर दिखाने लगती है। - 'गढ़ों को ध्वस्त करने के लिए ईश्वरीय सामर्थ्य,' 'परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध उठने वाली कल्पनाओं और प्रत्येक अवरोध का खण्डन करते।' यहाँ प्रत्येक प्रार्थना-की-चोट की कंपन स्वयं परमेश्वर के सिंहासन तक पहुँचता है। और उस सिंहासन के द्वारा अधिकारों और चारों तरफ के सांसारिक शक्तियों पर कार्य करता है। जिस तरह आटा गूंदते झूले की हर चोट का असर हमारे घर पर पड़ा था। मगर वह अंतिम प्रहार ही है जो दिखाई देनेवाला प्रभाव उत्पन्न करता है। कौनसी प्रार्थना, उत्तर की रहाई का कारण बनेगा, हम बता नहीं पायेंगे, मगर हम यह कह सकते है हरेक प्रार्थना का असर ज़रूर होता हैः हम जानते हैं 'कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगे, तो वह हमारी सुनता है,' और अगर हम जानते है कि वह हमारी सुनता है, उनसे जो हम माँगते है हमें ज़रूर प्राप्त होता है।'

प्रार्थना की दुनिया में इस कंपन शाक्ति के विषय को दर्शाते संत लूका रचित सुसमाचार में दो दृष्टान्त है। यहाँ सिद्धांत के क्षेत्र से निकलकर एक प्रकाशित प्रत्यक्ष सत्य स्पष्ट होता हैः ग्यारहवे अध्याय में तीन रोटियों का दृष्टान्त और अठारहवें अध्याय में विधवा और उसके बैरी का। इन दोनों में भी, ऐसा लगता है कि हमारे प्राणों के व्यक्तिगत जरूरतों के लिए प्रार्थना का प्रश्न नहीं है। क्योंकि इन्हें पाने के लिए बार बार पिता के पास आने की जरूरत नहीं है और ना ही दबाव डालकर पिता से अनिच्छुक जवाब निचोड़ने की। मगर हमें उनके वचन में ढूंढना होगा। तब तक जब तक ना वे हमारी जरूरत के अनुसार एक प्रतिज्ञा ना दे। और फिर सिर्फ विश्वास के साथ कि वह हासिल होगा, उस पर खड़े रहें।

मगर जब दूसरों के बारे में प्रार्थना का सवाल उठता है तो वह एक जटिल बात बन जाती है। वह पेचीदा सिर्फ इसलिए नहीं कि उनके व्यक्तित्व की स्वतंत्रता और उनके निजी इच्छाओं की बात है, बल्कि प्रधानों, अधिकारियों, अन्धकार की सांसारिक शक्तियों के कार्यो का कारण है। इसकी एक झलक, हमें दानिय्येल दसवें अध्याय में दिखाई देती है। 'पहले ही दिन जब उसने परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन करके मन लगाया', उसी दिन परमेश्वर की उपस्थिति से जवाब भेज दिया गया। मगर उसके विरोधी प्रधानों के साथ लड़ते आने के लिए इक्कीस दिन लगे। कुछ अजीब बात है कि उस पूरे समय के दौरान परमेश्वर को उन विरोधियों से लड़ने और दानिएल तक पहुँचने के लिए दानिएल की उपवास के साथ प्रार्थना की जरूरत थी।

उपर्युक्त दोनो दृष्टान्तों की तुलना कीजिए ... दोनों की शुरूआत बेबसी के साथ दुराग्रह करना थी, पहले में आधी रात, बंद दरवाजा, दूर सुनाई देती आवाज - 'अभी नहीं'। दूसरे में एक विधवा की तनहाई और उसको साहस देने के लिए कोई नहीं। साथ खड़ा होने के लिए कोई भाई या पुत्र नहीं। मगर फिर भी प्रत्येक विषय में 'आग्रह के कारण' हार नहीं मानने और दोनों ने हर कठिनाई के बीच संघर्ष करके विजय हासिल की है।

मगर इन दोनों में लक्ष्य अलग था। पहली पुकार, व्यक्तिगत लोगों की (प्रदाय) जरूरत के लिए, जो अपने जीवन की यात्रा के दौरान हमारे जीवन से गुज़रते है। और दूसरा वह संघर्ष है जो हम आगे चलकर सीखते हैं; उन प्रधानों, अधिकारियों जो आकाश में है जिनकी अगुवाई करनेवाला हमारा शत्रु शैतान है। इन दोनों में पहले, पहले बेबसी की स्थिति में पहुंचना हम देखते है, अपंग याकूब का पनिएल, जहाँ हमको परमेश्वर के साथ और मनुष्य के साथ प्रबलता मिलेगी।

'मेरे पास उसे खिलाने के लिए कुछ भी नहीं।' और हम अपनी सामर्थ्य या पवित्रता से कुछ ज़रूरत पूरी नहीं कर सकते। हमारी अलमारी खाली, सुनसान सड़क पर नानबाई (बेकर) के दुकान की तरह हमारे चारों तरफ संसाधन बंद – सारे बंद पड़े ताकि हम सिर्फ परमेश्वर पर भरोसा रखें। यह, पहली शर्त है। और दूसरी वह बेबस आग्रह है जो अंत तक, जब तक कि जवाब ने मिले, जारी रहे। विश्वासहीनता का एक विराम, शत्रु को पुनः शक्ति हासिल करने का अवसर देता है। जिस स्थान को हमने जीता है उसे पुनः जब्त करने का अवसर देता है। जैसे कि, अमालेकियों का प्रबल होना, जब मूसा अपना हाथ नीचे (प्रार्थना ठहर जाती) करता। 'परमेश्वर के सिंहासन पर हाथ रखना' (निर्गमन 17:16 फुटनोट) और उस सिंहासन के द्वारा, शत्रु पर प्रबल होना। सामर्थ्य का स्थान उस सिंहासन पर हाथ रखकर हम प्रबल होने का रहस्य सीखता है। 'निराश हुए बिना मनुष्य को संदैव प्रार्थना करना चाहिए।'

एक मुख्य स्वर है जिसे एक बार लगाया, तो स्वर्ग और धरती दोनों को हिलाया जा सकता है; उसके महान कंपन परमेश्वर के सिंहासन तक गूंजते है, नरक के फाटकों पर जिसका गर्जन सुनाई देता हैः 'कि यीशु के नाम पर प्रत्येक घुटना टिके।' एक बार, जब प्रार्थना की उठते राग में 'यीशु' के नाम का वह ताल बैठ जाये, तब बात सिर्फ आगे बढ़ने की ही होगी।

हम प्रार्थना में पवित्र आत्मा का सर्वाधिपत्य नहीं प्राप्त कर पायेंगे, जब तक

हम पहले अपने गुप्त जीवन में उनके शासन के तले पूरी तरह से आपना जीवन जी न रहे हो। 'पवित्र आत्मा की अधीनता में जीवन और शांति है।' - अपने लिए और दूसरों के लिए भी, यह कैसा लाभदायक जीवन और शान्ति होगी, शायद ही कोई अंदाजा लगा पाएगा।

इस संसार के आत्मिक शासकों के विरूद्ध, यीशु के नाम की सामर्थ्य को हम पूरी तरह से फिर भी समझ नहीं पायेंगे। हमारे चारों तरफ के लोगों की जरूरतों के पीछे इन्ही दुनिया के शासक है।

हमारे विरुद्ध लड़ रही इन भारी शक्तियों, हमारे चारों तरह की अपरिहार्य जरूरतें, हमारी बेबसी और साथ साथ जल्द घटती इस दुनिया में हमारा अल्प जीवन - इन सब का सामने करने की कोई रहस्य शक्ति पा सकते हैं तो यह जरूरी है कि हम उस शक्ति को हाँसिल करना सीख ले।

परमेश्वर ने अभी तक इस दुनिया के राजकुमार को अलौकिक शक्तियां दी है। उन्हें वापस ना ले, मगर वह हमारे पक्ष में एक शक्ति जो शत्रु के सामर्थ्य से भी बढ़कर है, भेज सकते है और भेजेंगे। और बात फिर वहीं पर आ जाती है जैसा की हम एस्तेर की कहानी में देखते है। [बाइबल में एस्तेर की कहानी देखे] उसके मन में और उस विधवा के मन में वही बात थी: और जवाब पाना जरूरी है और मुझे जवाब पाना ही होगा: और इस तरह वे इस विचार को लिए पूर्ण सादगी से आगे बढ़ते गये जब तक कि उन्हें उत्तर न मिले। वही कंपन का अब असर दिखने लगा। आखिरी अवरोध को भी जीत पाये और अंत में विजय प्राप्त हुई।

प्रार्थना जीवन का रहस्य सीखने के लिए कइयों के दिलों से पुकार उठ रही है। इस में पवित्र आत्मा का कार्य क्या हम देखने की कोशिश शुरू ना करे? क्या वे हमें तैयार नहीं कर रहें है। दुल्हन की उस अंतिम पुकार में शामिल होने [कलीसियाँ जो यीशु मसीह का दुल्हन है] - " हे प्रभु यीशु आ! " - यह पुकार जो सिर्फ कंपित ना करे बल्कि आकाश को फाड़ कर उस अंतिम शत्रु की शक्ति को सर्वनाश कर दे।

-लिलियास ट्रॉटर का " वाइब्रेशन्स" देखे।

स्वर्गीय ज्ञान

पवित्र बाईबल (याकूब 3:13-18)

3 तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कार्यों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रकट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है। परन्तु यदि तुम्हारे हृदय मे कटु ईर्ष्या और स्वार्थी आकांक्षा हो तो गर्व न करना और न सत्य के विरोध में झूठ ही बोलना। यह तो वो ज्ञान नहीं जो ऊपर से उतरता है, वरन् सांसारिक, स्वाभाविक और शैतानी है। क्योंकि जहाँ डाह और स्वार्थी आकांक्षा होती है, वहां बखेड़ा तथा हर प्रकार कीबुराई भी होती है। पर जो ज्ञान ऊपर से आता है, वह पहिले तो पवित्र होता है, फिर मिलनसार, कोमल, विचारशील, करुणामय और अच्छे फलों से लदा हुआ, स्थिर और कपट-रहित होता है। मेल-मिलाप कराने वाले उस बीज को जिसका फल धार्मिकता है मेल के साथ बोते हैं।

यीशु के धन्य वचन!

मत्ति (5:3-12)

3 धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

4 धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे।

5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

6 धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।

7 धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

9 धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।

10 धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

11 धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हरो विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें।

12 आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था।।